(1) Lecture Series No.-

Online Class
Date- 17.2.2022
Day-
Time- 10:50 to 11:40 A.M.

Topic.

(1) Vedanta.

Dr. Sunita Kumari
Department of Philosophy,
B.A Part-II
Paper-(5.)
A.N.D. College Shahpur patory,
Samastipur.

Ans:→

वेदों की प्रामाणिकता पर आधारित तर्क।
(The argument based on the authoritativeness of the vedas):→
भारतीय दर्शन का अत्यंत ही प्राचीनतम एवं प्रामाणिक ग्रन्थ है। प्रश्न उठता है कि वेदों की प्रामाणिकता का कारण क्या है। ? जैसे ग्रन्थों में वेदों की प्रामाणिकता का कारण उनके प्रवर्तक माने जाते हैं, उसी प्रकार वेदों की प्रामाणिकता का कारण ईश्वर है, वेद ईश्वर की वाणी, वेद में ईश्वर के विभिन्न आदेश निहित है और परमार्थतः सत्य है, वेद में लिखित शब्द तर्क एवं सीमा से परे हैं, वेद का रचयिता नहीं हो सकता है जो एक पूर्ण

P.T.O

सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान व्यक्ति हो। ऐसी सत्ता ईश्वर ही है। अतः वेदों का रचयिता ईश्वर है। वेदों को मनुष्य कृत रचना कहना भ्रामक है, क्योंकि सम्पूर्ण वेद ईश्वर की अभिव्यक्ति का परिचय देते हैं। इस तरह वेदों की प्रमाणिकता के आधार पर ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध होता है।

श्रुतियों की प्रामाणिकता पर आधारित तर्क (Proof based on the testimony of Shrutis):- ईश्वर के अस्तित्व का प्रमाण यह है कि श्रुति ईश्वर के अस्तित्व की चर्चा करते हैं। विभिन्न उपनिषदों और गीता में ईश्वर के रक्षक हैं, सबों का स्वामी है, सबों का शासक है, सभी प्रकार के बंधनों को अधिकारी और पुरस्कारों का दाता है। श्वेताश्वेतर उपनिषदों में भी कहा गया है।

P.T.O.

कि सभी विषयों में एक ही ईश्वर निहित है, वह सर्वव्यापी है, सभी का व्यवस्थापक एवं संरक्षक है, गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है।:—

मैं ही संसार का स्रष्टा, पालनकर्ता, संहारक हूं। इन विभिन्न श्रुतियों से ईश्वर के स्रष्टा, पालनकर्ता, संहारक तथा विश्व का नैतिक संचालक होने का सबूत मिलता है। इसके अलावे ईश्वर को नहीं मानने पर इन आप्त वचनों का महत्व ही प्रभावित हो जाता है।

इस तरह से श्रुतियाँ ईश्वर का अस्तित्व सिद्ध करती है।

Kant और Hermann Lotze ने कहा है, ईश्वर सिद्ध करने के लिए जितनी भी परंपरागत युक्तियाँ हैं, उनमें एक ही ईश्वर को ठीक-ठीक प्रमाणित कर सकी। किसी विषय को सिद्ध करने का अर्थ है, स्वीकार वाक्यों में etc.

"END"